डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 4 जून 2008 मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-दूसरा | जून-2008 | मासिक पत्रिका

2

धन्य अजायब
(अहमदाबाद में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी)

3

परमात्मा की आवाज
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

23

लहर
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
77 आर. बी. आश्रम राजस्थान

31

पवित्र
अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
उप सम्पादिका : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया
सहयोग : रेणु सचदेव, रोज़ी आनन्द, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह
सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर-335 039 जिला-श्री गंगानगर (राजस्थान)

Mobile : 9950 55 66 71 & 94144 - 80303
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website :** www.ajaibbani.org

धन्य अजायब

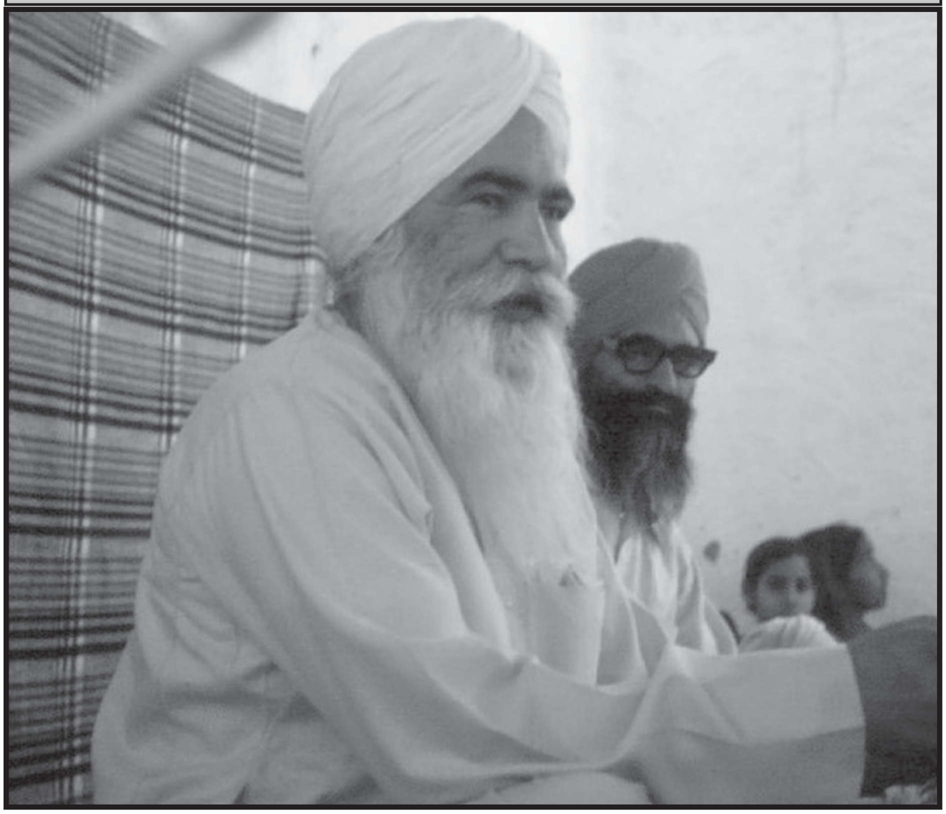

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 8, 9 , 10 अगस्त 2008 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाना विद्यार्थी भवन,
(फुटबाल ग्राउंड के सामने), कांकरिया,
अहमदाबाद - 380 008
फोन - 93270 11142, 94267 26583

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा की आवाज

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

मैं सर्वशक्तिमान परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर बड़ी रहमत की, अपने घर का निमंत्रण दिया; अपना यश गाने का मौका दिया। नया साल आप सबके लिए ढ़ेर सारी शुभकामनाएं लेकर आए। मैं आशा करता हूँ कि प्रभु ने हमें जिस मकसद के लिए चुना है, हम उस मकसद में कामयाब हों। मेरी आप सबको यही शुभकामना है कि आप इस साल ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करें, अन्दर तरक्की करें।

सन्त-महात्मा संसार में कोई समाज चलाने के लिए नहीं आते, किसी का धर्म तबदील करने के लिए नहीं आते। वे मालिक के हुक्म के अन्दर आते हैं और मालिक के हुक्म का ही प्रचार करते हैं। उन्हें परमात्मा जहाँ भेजता है वे वहीं जाते हैं। हम सन्तों का मिशन अन्दर जाकर ही समझ सकते हैं। सन्तों का मिशन भूली हुई आत्माओं को **परमात्मा की आवाज** के साथ जोड़ना है, चाहे वे नज़दीक हैं या दूर हैं।

सर्वशक्तिमान परमात्मा हम सबके अन्दर है जैसे लकड़ी या पत्थर के अन्दर अग्नि है जब तक हम युक्ति से लकड़ी के ऊपर लकड़ी रखकर नहीं रगड़ते, पत्थर को किसी चीज़ के साथ नहीं रगड़ते तब तक उसमें से आग के शोले पैदा नहीं होते। अग्नि उनके अन्दर है लेकिन वह हमें दिखाई नहीं देती।

इसी तरह परमात्मा अपने प्यारे बच्चे सन्तों को अपना वारिस बनाकर इस संसार में भेजता है। जिस तरह संसार में राजा-महाराजा और बड़े-बड़े नेता आते हैं प्रजा का अच्छा इंतजाम करना उनकी जिम्मेवारी होती है। वे इमानदारी से प्रजा का अच्छा इंतजाम करते हैं, उनके दुख में दुखी और सुख में सुखी होते हैं। प्रजा उनके आसरे होती

है अगर वे ईमानदारी से अपनी डयूटी नहीं निभाते, अत्याचार करते हैं तो आम कहावत है और सन्त-महात्मा भी कहते हैं:

तपो राज, राजो नरक।

वे जब परमात्मा के पास वापिस पहुँचते हैं तब परमात्मा उनसे पूछता है, "क्यों भई! तुमने अपने राज्य में कितने लोग सुखी रखे?" अगर उन्होंने प्रजा को सुखी रखा होता है और धर्म का राज्य किया होता है तो वे परमात्मा के आगे सच्चे हो जाते हैं अगर उन्होंने कौताही की होती है तो धर्मराज उन्हें सजा देता है।

इसी तरह सन्त-महात्माओं को बड़ी भारी जिम्मेवारी दी होती है कि वे टूटी हुई आत्माओं को **परमात्मा की आवाज** के साथ जोड़े। आत्माएं परमात्मा की खोज में बाहर घूम रही हैं जबकि परमात्मा इनके अन्दर है। हम सोचते हैं कि संसार इतना बड़ा है परमात्मा सबको क्यों नहीं बुला लेता? वह कुलमालिक है जो चाहे कर सकता है उसे कोई कुछ नहीं कह सकता।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''परमात्मा का न कोई भाई है, न बंधु है न कोई शरीक है। हम किसके आगे फरियाद करें या उसकी शिकायत करें। हम सिर्फ नम्रता से ही फायदा उठा सकते हैं। सन्त-महात्मा, परमात्मा के दरबार से नम्रता लेकर ही इस संसार में आते हैं; नम्रता ही उनका श्रृंगार होता है।''

सन्त-महात्माओं के पास सब्र होता है। हमें 'नामदान' देने में उनका कोई जाति फायदा नहीं होता। जिन आत्माओं का परमात्मा की दरगाह में फैसला हो चुका होता है कि मैंने इन्हें अपने साथ जोड़ना है, वही आत्माएं महात्माओं के चरणों में आती हैं। ऐसी गिनती की आत्माओं के लिए सन्तों के दिल में फिक्र होता है। उनके लिए नज़दीक या दूर का कोई फर्क नहीं पड़ता।

क्राईस्ट से पूछा गया कि आप इस संसार में ऊँची-नीची ढलानों में क्यों मारे-मारे फिरते हैं? उन्होंने कहा, "मेरी भेड़े गुम हैं।" आत्मा

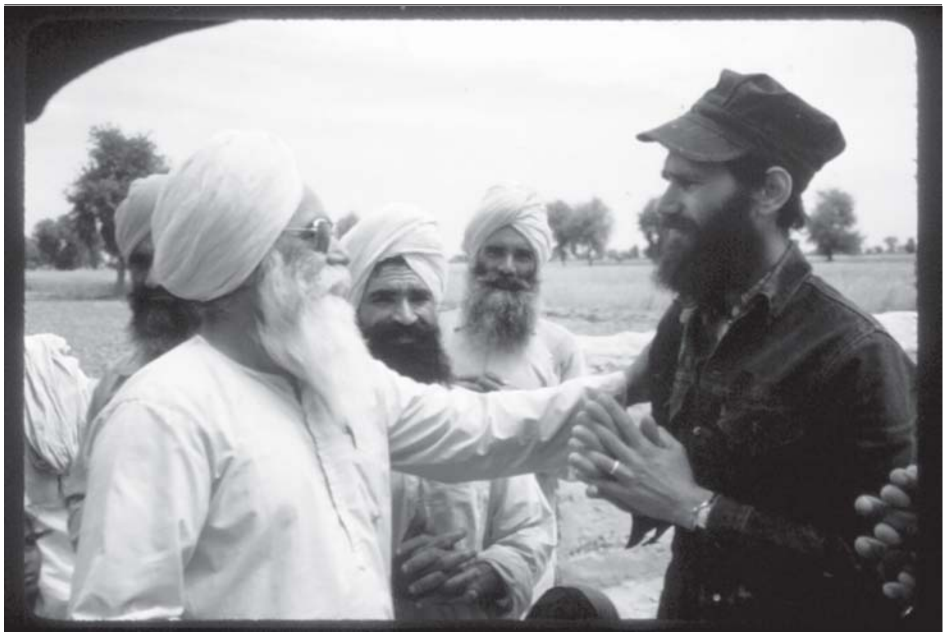

को भेड़ कहकर ब्यान किया गया है। यह मन जिधर भी चाहता है इसे ले जाता है। कबीर साहब ने भी ऐसा ही कहा हैः

कहे कबीर अचरज भई खेड़, लेले को चूमे नित भेड़।।

जीव सात समुद्र पार से आकर सन्तों से फायदा उठा जाते हैं, कई बार घरवाले रह जाते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

वैद्य वकील सन्त सरदारे, पिंड विच मान न पौंदे चारे।
नानक दादक ते घरवाली, ऐह वी रहन साध तो खाली।।

घर के और नज़दीक के लोगों को यकीन ही नहीं आता। वे सोचते हैं! यह हमारे साथ खेलता रहा है, खाता-पीता रहा है लेकिन इसमें बहुत बड़ा भेद होता है। जो लोग परमात्मा के चुनाव में आ जाते हैं वे अवश्य ही सन्तों के पास पहुँच जाते हैं।

सन्तों के ऊपर जिम्मेवारी आती है कि वे देह रूप में जीव के पास जाएं या शब्द-रूप होकर उसे 'नाम' के साथ जोड़े। हमें जीवनकाल में ही अनेकों ऐसे सेवक मिल जाते हैं जो कहते हैं कि हमें अन्दर से ही 'नाम' मिला हालाँकि वे सन्तों से हजारों मील दूर होते हैं। यह कोई

करामात नहीं, रिद्धि-सिद्धी नहीं, कोई दिखलावा नहीं। आत्मा को **परमात्मा की आवाज** के साथ जोड़ना उनकी जिम्मेवारी होती है।

सन्त-महात्मा संसार में आकर संसार की असलियत ब्यान करते हैं कि यह संसार क्या है? हमें इसमें क्यों भेजा गया है और आगे हमने कहाँ जाना है? हम नहीं जानते कि हम कहाँ से आए हैं, आगे हम कहाँ जाएंगे? यहाँ अंधा, अंधे का आगू है। न हमें अपना पता है, न ही किसी और के मुत्तलिक ज्ञान है। मुँह में ग्राही डालते हैं नहीं जानते कि वह किस तरफ चली जाती है! बेशक डाक्टरों ने शरीर की नाड़ियाँ गिन ली लेकिन वे तो जड़ शरीर की चीरफाड़ करने में ही लगे हुए हैं। जो चीज़ मन के पर्दे के पीछे छुपी हुई है उसका उन्हें ज्ञान नहीं।

सन्त-महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हमारी आत्मा सतपुरुष की अंश है। यह परमात्मा का घर, अपना राज घराना छोड़कर मन के देश में आ गई है। यह आत्मा आशा-तृष्णा की बंधी हुई नीचे कारण मण्डल में आई, इसके ऊपर कारण पर्दा चढ़ गया। जब सूक्ष्म मण्डल में उतरी तो इसके ऊपर सूक्ष्म पर्दा चढ़ गया। हम यहाँ स्थूल दुनिया में बैठे है जब यह आत्मा स्थूल दुनिया में आई तो इसके ऊपर स्थूल पर्दा चढ़ गया। जैसे एक पिंजरे के ऊपर दूसरा और दूसरे के ऊपर तीसरा। यह आत्मा जैसे-जैसे **परमात्मा की आवाज** से दूर होती गई अपने घर की याद भूलती गई और अपना प्रकाश गुम करती गई।

महाराज जी मिसाल देकर समझाया करते थे जैसे किसी जलते हुए लैम्प पर मोटे कपड़े चढ़ा दें! उसकी रोशनी कम हो जाती है अगर युक्ति से लैम्प पर चढ़े हुए कपड़े उतार दिए जाएं तो लैम्प पूरी रोशनी में आ जाता है और हम वहाँ रखी हर चीज़ देख सकते हैं। इसी तरह हमारी आत्मा पर कारण, सूक्ष्म और स्थूल पर्दा चढ़ा हुआ है।

जब हम सन्त-महात्मा के कहने के मुताबिक तीनों पर्दे उतार लेते हैं तो आत्मा पारब्रह्म में पहुँच जाती है फिर इसे पता चलता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है। मैं उस परमात्मा की अंश हूँ। मैं परमात्मा से

बिछुड़कर इस मन के पीछे लगकर अपना ही मज़हब बनाकर दूसरे मुल्कों से प्यार करती रही। मेरा घर तो सच्चखंड है। मैं सतनाम की अंश हूँ और प्यार मेरा धर्म है।

आप किसी भी महात्मा की बानी पढ़कर देख लें! हर महात्मा ने हमें यही बताया है कि परमात्मा एक है, हमारे अन्दर है अगर बाहर होता तो उन्हें मिल जाता जो लोग घर-बार छोड़ देते हैं। पशु, पक्षियों को मिल जाता वे बेचारे क्यों तड़फते फिरते?

कन्ने कुड़ी गोराही होका, ऐवे ढोल वजाण सखे।।

अगर किसी के घर में बहुत सारा सोना दबा हो और वह कौड़ी-कौड़ी माँगता फिरता हो तो उसे उस सोने से क्या फायदा? अगर उसे उसके घर का भेदी मिल जाए! कि तू अरबों रुपयों का मालिक है क्यों मारा-मारा फिरता है? वह उस भेदी के कहने के मुताबिक उस जगह को खोदता है और उसमें से सोना निकालकर बादशाह बन जाता है। अब वह किसका धन्यवाद करे सोने का या सोना दिलवाने वाले का? प्यारेयो! सोना तो पहले ही उसके घर में था लेकिन उस बेचारे को पता नहीं था, वह बाहर कौड़ी-कौड़ी माँग रहा था। इसलिए वह सोना दिलवाने वाले का ही धन्यवाद करता है।

इसी तरह हम चौरासी लाख योनियों में चक्कर लगाते हुए पशु-पक्षी भी बनते हैं। हमें हर एक जन्म में माता-पिता, बहन-भाई, काम-भोग, दुख-सुख सब कुछ मिलता है। आप देखें! पशु-पक्षी, जानवर सभी दुख-सुख भोगते हैं, उन्हें भी हिसाब-किताब देना पड़ता है अगर इन्सानी जामें में आकर हमें बाल-बच्चे मिल जाए! हम काम-भोग, ऐशो-इशरत में लग जाए यह कोई नई चीज़ नहीं।

सन्त-महात्मा संसार में आकर हमें हमारी कमियाँ बताते हुए खबरदार करते हैं, ‘‘देख भाई! यह दुनिया तेरा असली घर नहीं, तेरा असली घर सच्चखंड है। यह कौम तेरी असली कौम नहीं, तेरी असली कौम सतनाम है। तूने अपने घर को भूलाकर मन का साथ ले लिया है

और मन ने इन्द्रियों का साथ ले लिया है; ये इन्द्रियाँ ख्वाहिशों के बस में है। आँखों की इन्द्री सुंदर रूप पर ले जाती है। कानों की इन्द्री राग-रंग पर ले जाती है। मुँह की इन्द्री अच्छे-अच्छे स्वादों पर ले जाती है।'' गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

औगुण फिर लागू भए, कूड़ वजाए धूड़।

ये इन्द्रियाँ धर्मराज के दरबार में जाकर जीव के खिलाफ गवाही देती हैं कि क्या तूने हमारे साथ सब स्वाद नहीं लिए; क्या तूने हमें बुरे कर्मों के लिए इस्तेमाल नहीं किया? वहाँ सब कुछ ही सिनेमा की स्क्रीन की तरह सामने आ जाता है, यह जीव इंकार नहीं कर सकता।

गुरु नानकदेव जी से कुछ प्यारेयों ने सवाल किया कि संसार की असलियत क्या है? आप इस शब्द में प्यार से जवाब देते हैं:

जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा।

हम राजस्थान में रहने वालों को तो यह बात अच्छी तरह से समझ आ सकती है। अब तो रेगिस्तान में नहरें पहुँच गई हैं। पहले जब बीकानेर के इलाके की तरफ बारिश नही होती थी तो वहाँ के लोग अपना सामान और जानवर लेकर पंजाब की तरफ आ जाते थे लेकिन वे इस तरफ आकर अपने पक्के मकान नहीं बनाते थे, वे यहाँ आरजी तौर पर तम्बू वगैरहा लगाकर ही रहते थे। उनके दिल में अपने वतन की याद रहती थी, वे आने-जाने वालों से पूछते रहते थे कि क्या हमारे वहाँ बारिश हुई है? यह हम अपनी आँखों से देखते रहे हैं।

गुरु नानकदेव जी गाय चराने वालों को गोइलि कहकर ब्यान करते हैं और गोइल वह जगह होती है जहाँ जानवरों को चराने के लिए लाया जाता है। जब अकाल पड़ता है तो लोग अपने पशुओं को वहाँ लेकर चले जाते हैं जहाँ उनके पशुओं को चारा मिल सके।

इसी तरह हम जीव इस संसार में आते हैं। समझदार लोग इस संसार को अपना घर नहीं समझते। वे हमें भी बताते हैं कि यह संसार

आपका असली घर नहीं, आपकी आत्मा सच्चखंड की रहने वाली है अगर हमें यह बात समझ आ जाए! हम परमात्मा को बड़ी आसानी से पा सकते हैं। हमारे और परमात्मा के बीच हमें नीचे की तरफ खींचने वाला दुनिया का मोह है। हम जहाँ आकर बैठते है उस जगह के आसपास का मोह, प्यार हमें बाँध लेता है। हम उसी प्यार में बँधकर परमात्मा की याद को बिल्कुल भूल जाते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

दात प्यारी विसरया दातारा।

हमें दाते प्यारी लगती हैं लेकिन हम इन दातों को देने वाले परमात्मा को भूले हुए हैं। हम नहीं सोचते! यह घर हमारा नहीं। हमनें एक दिन यहाँ से बिस्तर उठाकर चले जाना है। यहाँ न राजा रहता है न प्रजा रहती है। न औरत रहती है न मर्द रहता है। हम यहाँ अपने कर्मों का लेखा-जोखा देने के लिए आते हैं।

ये हमारी ही ख्वाहिशें होती हैं कि हम एक जन्म में बेटे-बेटियों, धन पदार्थ की माँग करते हैं। मालिक हमें उसी जगह जन्म दे देता है जहाँ हमारी ख्वाहिशें पूरी हो सकें। जब हमारी ख्वाहिशें पूरी होने में कष्ट या परेशानी मिलती है तो हम घर की जिम्मेवारी छोड़कर जंगलों-पहाड़ों में चले जाते हैं, वहाँ भी हमारा मन हमें चैन नहीं लेने देता।

मुझे अपनी जिन्दगी में उदासी मत और निर्मला मत में भी घूमने का मौका मिला है। वहाँ अखाड़ों में लड़ाई-झगड़े हैं, ईर्ष्या डेरा लगाकर बैठी है। आजकल भी हरिद्वार में जब कुम्भ का मेला लगता है तो उदासी, सन्यासी एक-दूसरे को मरने-मारने पर आ जाते हैं। सन्यासी कहते हैं, ''हमारी शाही-सवारी पहले निकलेगी।'' नागा कहते हैं, ''हमारी शाही पहले निकलेगी।'' उदासी कहते हैं कि हमारी शाही पहले निकलेगी।

सोचकर देखें! हमने क्या छोड़ा? अपने हाथों की नेक कमाई छोड़कर लोगों की कमाई के आसरे रहने लग जाते हैं। जो किसी को दान देता है वह कोई न कोई आशा रखकर ही देता है। ऐसे लोगों को

भजन का पता नहीं कि भजन क्या चीज़ है? उन्हें तो यह अहंकार है कि हम सन्त हो गए हैं, हमने घर-बार छोड़ दिया है, कपड़े रंग लिए है।

टुक्कर बोचू बेअंत, विरले होंणगे भजन भगवान वाले।

महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''देखो प्यारेयो! किसी का खा लेना तो बहुत आसान है लेकिन हिसाब देना बहुत मुश्किल है। उसका हिसाब देने के लिए ऊंट, गधा, बैल बनना पड़ेगा। सतसंगी को सोचकर खाना चाहिए अगर किसी का खा लेते हैं तो उसका उतना काम कर दें।'' कबीर साहब कहते हैं:

गृही का टुक्कर बुरा, नौ-नौ उंगल दांत।
भजन करे ताँ उभरे, नहीं ता कडडे आंत।।

पिछली जनगणना में 52 लाख साधुओं की गिनती हुई, अगर 'शब्द-नाम' की कमाई वाले निकालें तो मुश्किल से चार-पाँच ही निकलेंगे। भजन वाले तो विरले ही होते हैं। ऐसे लोग अपना बोझ दुनिया पर डाल देते हैं, अपनी जिम्मेवारियाँ छोड़ देते हैं।

मेरा एक खास दोस्त यहाँ सतसंग में बैठा है। वह किसी साधु की सेवा किया करता था। वह साधु इसके गाँव में आकर रहने लगा। उसने इनके खेत में ही अपना मकान बना लिया और इस प्रेमी की डयूटी लगा दी कि यह अपनी पत्नी का बना हुआ खाना न खाए। आपको पता ही है कि जब पति पत्नी के हाथ का बना हुआ खाना न खाए तो पत्नी के दिल पर क्या बीतती है? वह मेरे पास इस बात की हमेशा ही तारीफ करते कि यह इतना बड़ा त्यागी है कि पत्नी के हाथ का बना हुआ खाना नहीं खाता।

उसके 10-12 बच्चे थे। उनका सारा परिवार बैठा था। मैंने कहा, "यह इतना बड़ा त्यागी है तो फिर ये बच्चे कैसे पैदा हो गए? जो काम छोड़ना था वह छोड़ा नहीं।" वे जब किसी औरत को देखते तो उसे पत्थर मारकर कहते , "पीछे हो जाओ! बाबे आ रहे हैं।" वहाँ महाराज सावन

सिंह की नाम लेवा एक औरत थी। उन्होंने उसके साथ कुछ ऐसा ही किया, वह औरत बहुत परेशान हुई। आप जानते हैं कि जब प्रेमी को क्रोध आता है तो उसके मुँह में जो आए वह बोल देता है।

मैंने उस प्रेमी से सवाल किया, "जब औरत के पेट से जन्म लिया था उस समय तुम एक माँस का लोथड़ा ही थे। उस समय औरत को कैसे पत्थर मारे थे?" उसके पास कोई जवाब नहीं था। सन्त-महात्मा किसी औरत की खिलाफत नहीं करते। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

सो क्यों मंदा आखिए जित जम्मे राजान।

औरत को क्यों बुरा कहा जाता है, औरत का क्या कसूर है? औरत, मर्द, बच्चा, बूढ़ा जवान जो भी भक्ति करे परमात्मा को पा सकता है अगर जवानी में 'नाम' मिल जाए उस समय इन्सान मजबूत होता है, कई-कई घंटे लगातार अभ्यास कर सकता है और मन संसार में कम फैला होता है।

गोइलि जब जानवर चराने जाता है तो वह अपना ध्यान आगे की तरफ रखता है। इसी तरह सन्त-महात्मा मालिक के भेजे हुए संसार में आते हैं लेकिन अपना ख्याल प्रभु के चरणों में ही रखते हैं। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''मेरा दिल संसार में आने के लिए नहीं करता था लेकिन मैं मालिक का हुक्म नहीं मोड़ सका। मैंने इतना अभ्यास किया कि मैं दो से एक हो गया फिर भी मेरी सुरत मालिक के चरणों में ही जुड़ी रही।'' सन्त-महात्मा संसार में मालिक के हुक्म की इंतजार में होते हैं कि हमें कब आवाज पड़े।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''जैसे कोई मेहमान किसी के घर जाकर घरवालों पर अपनी मर्जी नहीं थोपता कि मैंने यहाँ एक रात रहकर चले जाना है।'' सन्त-महात्मा हमें समझाते हैं कि हमने भी यहाँ एक रात की तरह ही रहना है। मार्कंडे ऋषि अच्छी कमाई वाले थे। आपने संसार में सबसे लम्बी आयु भोगी। पुराणों में और गुरु ग्रन्थ साहब में आपकी कथाएं आती हैं:

मार्कंडे ते को अधिकाई जिन तिल धर मूंड बलाए।

मार्कंडे ऋषि ने एक झोपड़ी में ही अपनी जिन्दगी व्यतीत की कि पता नहीं कब बुलावा आ जाएगा! आप कहते हैं:

मेरी मेरी कौरव करते दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र झुला था, देही गिरज न खाई।
सर्व सोने की लंका होती रावण से अधिकाई।
कहाँ भए दर बाँधे हाथी खिन्न में होई पराई।
दुर्वासा स्यों करत ठगोरी यादव ने फल पाए।
कृपा करे जन आपणे ऊपर नाम दयो हर गुण गाए।।

जिस पर परमात्मा दया करता है वह महल-माड़ियों में रहते हुए भी 'नाम' की कमाई करता है। वह अपने पास आने वालों को भी 'नाम' की तरफ ही लगाता है।

कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घरबारा।।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं, ''दुनिया की सभी चीज़े नाशवान है। हम जो कुछ भी यहाँ इन आँखों से देखते हैं इन सबने एक दिन नाश हो जाना है, फनाह हो जाना है।''

कूड़ राजा कूड़ प्रजा कूड़ सब संसार।
कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बेसनहार।।

हम खुद सपने की तरह हो जाएंगे। हमने सदा जिस घर में रहना है हमें उसकी चिंता नहीं। आप कहते हैं:

जो घर छड़ जावणा, सो लग्गा मन माहे।
जित्थे जाए तुध वरतना, तिसकी चिंता नाहे।।

हमने जिस रास्ते पर जाना है हमें उस रास्ते का ज्ञान नहीं। हमने कभी यह भी जानने की कोशिश नहीं की कि वह रास्ता कैसा है? जहाँ से हमारा बिस्तर झाड़कर उठा देना है उसकी चिंता लगी हुई है।

सेठ हीरालाल मकान बनवाने लगा। उसने बहुत ऊँचा और अच्छा मकान बनवाया। वह मुझे मकान दिखाने के लिए ले गया उस समय

उसके बच्चे भी साथ थे। मेरे कानों में अभी भी वह बात गूंजती है जो मैंने उस मकान के ऊपर जाकर बोली थी लेकिन उनमें किसी को यह बात समझ नहीं आई कि इसका मतलब क्या है? कुछ ही महीनों बाद वह चोला छोड़ गया। वह बात यह थीः

इधर महल माड़ियाँ शुरु होईयाँ, उधर चन्द्री कब्र बुलावंदी ऐ।
होणी जगत सरां विच सुतेया, नू बिस्तरा झाड़ उठावंदी ऐ।
हौंदी आणके तुरन्त जुबान गूँगी, पापण जदों दहलीज़ ते आवंदी ऐ ।।

तब जुबान बंद हो जाती है, आँखें उसी जगह रुक जाती हैं। हम अपनी प्लेनिंग बनाते हैं लेकिन परमात्मा की प्लेनिंग का किसी को पता नहीं। गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैंः

मता करे पश्चिम की ताईं पूर्व ही ले जात।

हम पश्चिम की तरफ जाना चाहते हैं लेकिन मालिक हमें पूर्व की तरफ ले जाता है। हम जीना चाहते हैं मालिक अन्दर आवाज मार देता है। हम बाहर जो कुछ भी आँखों से देखते हैं यह सब नाशवान है। सत्य एक परमात्मा ही है या जो उस परमात्मा से जुड़ जाते हैं।

गुरु गोविंद सिंह जी महाराज से किसी ने सवाल किया, "संसार में सदा कौन रहेगा? दुनिया में किसका नाम रहेगा?" आपने कहा, "पहले तुम बताओ मैं फिर बताऊँगा।" किसी ने कहा कि सराय बनवाओ। किसी ने कहा कि स्कूल बनवाकर उस पर नाम लिख दें। किसी ने कहा कि कुआँ बनवाकर उस पर नाम लिख दें। हम दुनियादार लोग ऐसी ही बातों से बंधे होते हैं; सबने अपने-अपने तजुर्बे बताए।

गुरु साहब कहते हैं, ''ओऊँम तक दुनिया खत्म हो जाती है। सच्चखंड के दरवाजे तक महाप्रलय में दुनिया का नामोंनिशान नहीं रहता।'' गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैंः

कई बार पसरयो पासार।

हम जो कुछ देखते हैं यह सब पसारा पहले भी कई बार पसर चुका है। परमात्मा सदा से है, पहले भी था अब भी हैं; आगे भी रहेगा।

नाम रहयो साधु रहयो रहयो गुरु गोविंद।
कहो नानक इस जगत में किन जपयो गुरुमंत्र।।

परमात्मा सत्य है सदा रहने वाला है। जो लोग भक्ति करके उसमें समा जाते हैं वह भी उतने ही सत्य है जैसे चीनी में पतासा समा जाता है।

जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''हम अपनी आँखों से दुनिया को जाते हुए देखते हैं कि यह यहाँ व्यापार करने के लिए आया था अब जा रहा है। यह क्या व्यापार करके ले गया? इसने मुट्ठी बंद करके जन्म लिया था और हाथ पसारकर जा रहा है।''

हम यही सोचते हैं! हम सब तो जाग रहे हैं शायद गुरु नानक देव जी को गलती लग रही है। हम दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं लेकिन परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं। कबीर साहब कहते हैं:

इक दिन सोवन आएगा लम्बे गोड़ पसार।

एक परमात्मा ही जागता है या उसके साथ जुड़ जाने वाले जागते हैं बाकी हम सब सोए हुए हैं।

नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई।।

सन्त-महात्मा घर बनाने को बुरा नहीं कहते अगर मालिक किसी को हिम्मत देता है तो घर जरूर बनाओ लेकिन अपने सफर को भी आँखों के आगे रखें कि हमने यहाँ चार दिन काटने हैं। मकान अच्छा बना हुआ होगा तो चार दिन सुख से काट लेंगे लेकिन उस समय को ना भूलें जिस दिन हमारा माता-पिता, बहन-भाई से बिछोड़ा हो जाएगा। कबीर साहब कहते हैं:

जां जलिए तब होए भस्म तन रहे किरम दल खाई।

अगर हिन्दु हैं तो अग्नि के सपुर्द हो जाएंगे हमारा तन भस्म हो जाएगा। दबा दिए गए तो करोड़ों ही कीड़े इस तन को खा जाएंगे। जो

तन को दबा देते हैं उनका ख्याल है कि शायद मुर्दे इसी तरह पड़े रहते हैं। मुर्दें को अच्छे सन्दूक में डालें या मिट्टी में दबा दें! जब आत्मा निकल जाती है तो शरीर में से बदबू आने लग जाती है। इसमें बड़ी जल्दी कीड़े पड़ जाते हैं।

आप प्यार से कहते हैं कि इस संसार के सफर को आँखों के आगे रखें। जो संसार के सफर को आँखों के आगे रखते हैं वे रात को जागते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं। वे यही सोचते हैं कि परमात्मा ने हमें अपनी भक्ति के लिए कीमती समय दिया है।

पिंडु पवै जिउ चलसी जे जाणै कोई ।।

हमारे मूर्ख मन को समझ नहीं आती। हम तो सोचते हैं! मौत दूसरों के लिए है हमारे लिए तो शराब-कबाब, ऐशों-इशरतें ही हैं। जब मौत आती है यह शरीर मिट्टी की ढेरी हो जाता है, आत्मा उड़ारी मार जाती है। उस समय कितने भी अच्छे वैद्य-हकीम बुला लें सब जवाब दे जाते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

औखद आए रास जे विच आप खलोया।

वही दवाई रास आती है जिसमें परमात्मा मदद करता है।

वैद्य कहे हो ही भला, दारू मेरे वस।
ऐह ते वस्त गोपाल की, जब भावे ले खस।।

ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज किसी की मौत का दृश्य बताते हैं कि वहाँ बूढ़ी औरतें हैं-हैं करती हैं, उई-उई करती हैं और भी कई किस्म के हल्ले-गुल्ले करती हैं। गुरु साहब कहते हैं, ''तुम ये क्या करती हो? तुम लोगों को उस जीव की चिंता नहीं कि वह कहाँ चला गया है, उसकी आत्मा के साथ क्या हो रहा है? तुम जिसे रो रही हो वह तुम्हारा रोना नहीं सुनेगा। हम अपने धंधों के लिए बिलखते हैं।''

तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ।।

आप कहते हैं, ''देखो प्यारियो! तुम तो उसे रो रही हो, तुम्हें कौन रोएगा? वह तुम्हारा रोना नहीं सुनेगा। पता नहीं वह मालिक के हुक्म से किस योनि में चला गया है।''

धंधा पिटिहु भाईओ तुम्ह कुड़ु कमावहु ।।
ओहु न सुणई कतही तुम्ह लोक सुणावहु ।।

काल ने एक बार सत्तर युग फिर एक बार चौंसठ युग सतपुरुष की भक्ति करके इस त्रिलोकी की माँग की। परमात्मा ने सेवावश काल को आत्माएं सौंप दी। गुरु नानक देव जी कहते हैंः

खण्ड पाताल द्वीप सब लोआ, काले वस आप प्रभ कीया।

काल ने बहुत तपस्या करके परमात्मा से आत्माएं माँगी हैं। यह दुनिया, बगीचा, खेती उसी की है। यह काल की मर्जी है कि कच्ची खेती काटे या पक्की काटे! इसी तरह किसान खेत में बीज डालता है, खेती किसान की है, यह किसान की मर्जी है कि मैंने इसे कब काटना है?

बालक मरे बालक की लीला, कह-कह रोवे बाल रंगीला।

बच्चा मर जाता है, यह काल की लीला है। हालाँकि हमने उस बच्चे से बातचीत भी नहीं की होती फिर भी कहते हैं कि वह ऐसा था वैसा था, बड़ा सुन्दर था।

जिसकी चीज़ सोई ले जावे भूला रोवण हारा हे ।

यह चीज़ आपकी नहीं। जिसकी थी वह ले गया। हम भूल में हैं।

माया कारण पिड़ बंध रोवे।

अगर जवान मर जाता है तो हम कहते हैं कि उसके होते हुए हमें कोई फिक्र नहीं था। वह सारा कारोबार संभालता था लेकिन हमने उसकी आत्मा के लिए कभी एक रात भजन-सिमरन में भी नहीं लगाई। कहीं जाकर फरियाद नहीं की।

पश्चिम में हमारे काफी सेवक हैं। वहाँ के लोगों के अन्दर खास जागृति है। जब ऐसा मौका आता है कि घर का कोई जीव चोला छोड़ रहा होता है तो वे जिसे मानते हैं उसके आगे जरूर प्रार्थना करते हैं। वे लोग जब सब कुछ आँखों से देखते हैं तो मुझे यहाँ पत्र लिखते हैं। सतसंगी भाई-बहन वहाँ जाकर कई-कई महीने अभ्यास करते हैं। उन्हें ज्ञान है कि इससे चोला छोड़ने वाले की आत्मा को फायदा होगा।

हमारे सतसंगियों में भी जब कोई चोला छोड़ता है तो कई प्रेमी आँखों से देख लेते हैं कि गुरु संभाल कर रहा है लेकिन शर्त यह है कि उस समय कोई गैर सतसंगी पास में न हो और घर के लोग रोते-चिल्लाते न हो। चोला छोड़ने वाले से पूछें कि स्वरूप आ रहा है, सिमरन याद है अगर नहीं तो उसे सिमरन याद कराएं; यह बड़ी उत्तम सेवा है।

आमतौर पर हम लोग अपना संतुलन खो बैठते हैं। उसे आराम से चोला भी नहीं छोड़ने देते, उसके ऊपर लेटते हैं। वह सुनता नहीं, हम लोगों को सुनाते हैं। हमें उसकी आत्मा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो हम नहीं करते।

जिस ते सुता नानका जागाए सोई ।।

आप कहते हैं, ''प्रभु ने सब कुछ अपने हाथ में रखा है कि किसे जगाना है और किसे फिर संसार में भेजना है। जीव यहाँ आँखें बंद करता है किसी और योनि में जाकर खोल लेता है। आत्मा अमर है। आत्मा को न आग जला सकती है न पानी डुबो सकता है और न ही कोई शस्त्र काट सकता है। शरीर का धर्म है कि यह मरता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसके साथ तुम्हारा प्यार है उसे भूलकर भी न रोएं, भजन करें।''

जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ।।

अगर हमें जिन्दगी में अपने घर का पता लग जाए! तो फिर नींद कहाँ? महाराज कृपाल सदा यही कहते थे, ''जिनकी रातें बन गई

उनका सब कुछ ही बन गया।'' आप पर नींद का कोई असर नहीं था, आप सारी-सारी रात जागते रहते थे। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सतगुरु आए दीन्हा जगहेला, जागो रे मेरे प्यारे जागो।

जागे हुए महात्मा आकर हमें भी मालिक की याद में जगाते हैं।

जे चलदा लै चलिआ किछु संपै नाले।
ता धन संचहु देख कै बूझहु बीचारे।।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''हम अपनी आँखों से अपने साथियों को संसार छोड़ते हुए देखते हैं अगर वह बेटे-बेटियाँ, हाट-हवेली, धन-दौलत साथ ले गया है तो आप भी जरूर इकट्ठा करें अगर वह खाली हाथ गया है तो हम क्या आशा लगाकर बैठे हैं कि यह सब हमारे साथ जाएगा?'' कबीर साहब कहते हैं:

कहे कबीर कुछ गुण विचार, चले जुआरी दोए हाथ झाड़।

जुआ खेलने वाला सारा दिन माथा मारता है लेकिन शाम को खाली हाथ घर जाता है। जब परम पिता कृपाल ने चोला छोड़ा। मैं उस समय बहुत उदास था। उस समय मैं दुनिया से छिपकर सुन्दरपुरा की नहरी कोठी के रेस्ट हाऊस में जाकर रहा। जहाँ हम भजन करते हैं वहाँ आस-पास के लोगों को पता लग ही जाता है कि यहाँ कोई साधु है। जब मैं शाम को बाहर निकलता तो वे लोग इकट्ठे होकर बैठ जाते। मेरा खाना वहाँ का चौंकीदार तैयार करता था।

वहाँ एक तार-बाबू था जिसे जुआ खेलने की आदत थी। एक दिन तार-बाबू ने सोचा! सन्तों को खाना खिलाते हैं शायद जुए में फायदा हो जाए। जब मैं शाम को बाहर आया तो मैंने चौकीदार से पूछा कि आज तूने खाना नहीं बनाया? उसने कहा, "आज तार-बाबू ने आपको खाने का न्यौता दिया है।" मैंने कहा, "मैंने तो आज तक किसी का न्यौता नहीं खाया।" इतने में तार-बाबू और उसकी घरवाली आ गई। वे कहने लगे कि आज तो आपको हमारे यहाँ खाना खाना पड़ेगा।

मुझे उसके बारे में कुछ ज्ञान था कि यह जुए में काफी कुछ हार चुका है। मैंने कहा, "मैं खाना तो खा लूंगा लेकिन तुझे जुआ छोड़ना पड़ेगा, मैं अपना असूल तोड़ देता हूँ तू जुआ खेलना छोड़ दे।" उसने कहा कि मैं जुए में बारह हजार रूपये हार चुका हूँ। मैं यह रूपये पूरे कर लूँ फिर कसम खाकर कहता हूँ कि जुआ छोड़ दूँगा। मैंने कहा, ''जो तेरे पास थोड़ा बहुत है वह भी चला जाएगा।'' मालिक की दया से मेरे वहाँ रहते-रहते ही उसका शहर में एक मकान था वह उसे भी जुए में हार गया। जिस तरह आज तक जुए में कोई नहीं जीता उसी तरह यह दुनिया विषय-विकारों का सौदा भी एक जुआ ही है। इसमें भी हम खाली हाथ ही जाते हैं।

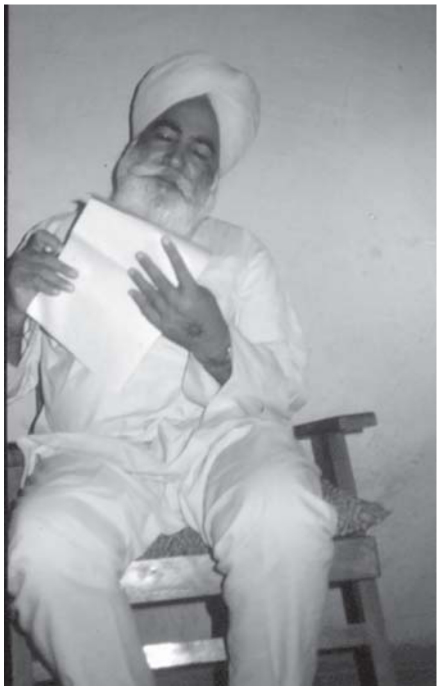

वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ।।

आप 'नाम' का व्यापार करें इसी में लाभ है। आपको आखिरी समय में पछताना नहीं पड़ेगा क्योंकि जिन्दगी का एहसास मौत के समय ही होता है। तब जीव सोचता है! मैं अपनी पूँजी कौड़ियों के भाव बहाकर जा रहा हूँ।

अउगण छोड़हु गुण करहु ऐसे ततु परावहु।
धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अपने अवगुण देखें, दूसरे के गुण देखें लेकिन हम अपने गुण और दूसरों के अवगुण देखते हैं। बेशक

हमारे अन्दर कोई गुण न भी हो फिर भी हम दिन-रात दूसरों की निन्दा करते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''निन्दा न खट्टी है न मीठी है और न चटपटी है फिर भी सारे समाजों को लगी हुई है।'' कुत्ता हड्डी खाता है उसमें से कुछ नहीं निकलता, यही हालत निन्दक की है। किसी की निन्दा गन्द खाने के बराबर है। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

पर निन्दया पर मल मुखसुदी।

निन्दा करना दूसरे की मैल खाने के बराबर है फिर भी जिन्हें यह आदत है वे दिन-रात इसमें से स्वाद लेते हैं। वही लोग ऐसा करते हैं जो अपने अवगुण नहीं देखते। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दोख पराया देखकर, चलत हँसत - हँसत।
आपदा कबहु न देखया, जिसका आदि न अन्त।।

अपने अन्दर भी झाँककर देखें! फरीद साहब कहते हैं जब हमें कोई दरवेश या सन्त कहता है तो हमें शर्म आती है।

काले मेन्डे कपड़े, काला मेन्डा वेश।
गुनही भरया मैं फिरां, लोक कहन दरवेश।।

सन्त कोई छोटा-सा शब्द नहीं। वही सन्त है जो सच्चखंड पहुँच जाता हैं जिसका मिलाप सतपुरुष से हो जाता है उसके अन्दर कमाल की नम्रता होती है। अगर हमें कोई सन्त कहे तो हम फूले नहीं समाते बेशक हमारे अन्दर सन्तों वाला कोई गुण न हो।

तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ।।

परमात्मा ने हमें संसार में 'नाम' का व्यापार करने के लिए भेजा है। जो लोग नाम की पूँजी जोड़कर ले जाते हैं वही असली व्यापारी हैं।

करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा।।

अब गुरु नानकदेव जी हमें चेतावनी देकर संसार की असलियत बताकर असली मकसद की तरफ लाते हैं:

कर्म होए सतगुरु मिलाए, सेवा सुरत शब्द चित लाए।

जब हमारे पूर्वले कर्म जागते हैं, हमारा साथ देते हैं तो हमारा मिलाप किसी महात्मा से होता है। जब महात्मा हमारे ऊपर दया करता है तो वह हमारी सुरत को कण-कण में व्यापक **परमात्मा की आवाज** के साथ जोड़ देता है।

किसी महात्मा ने **परमात्मा की आवाज** को हरि कीर्तन कहा है। गुरु नानकदेव जी उसे धुर की बानी, हरि की बानी, सच्ची बानी, अमर हुक्म कहकर ब्यान करते हैं। मुसलमान उस आवाज को बाँगे असमानी और हिन्दू महात्मा राम-नाम, राम-धुन कहते हैं।

महात्मा हमें बाहर के किसी कर्म-काण्ड में नहीं फँसाते और न ही वे इनमें खुद विश्वास रखते हैं। गुरु अर्जन देव जी कहते हैं:

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जोगाती लूटे।
निवार्ण कीर्तन गाओ हर करसे का निमख स्मृित जित छूटे ।।

सन्तों का उपदेश चारों वर्णों के लिए है। चारों वर्णों में सारी दुनिया आ जाती है। यह बिना लिखा कानून बिना बोली भाषा है। सन्त-महात्मा उसी के साथ जोड़ने के लिए आते हैं।

नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा।

सन्त 'नाम' में से आते हैं, 'नाम' का होका देते हैं; नाम का ही व्यापार करते हैं। सन्त सेवको को भी 'नाम' के साथ ही जोड़ते हैं।

सन्तों का अनुभव खुल जाता है। हम बिना अनुभव के उसे देख नहीं सकते क्योंकि ये चमड़े की आँखें सूरज, चन्द्रमा या किसी लैम्प की रोशनी के आसरे ही देखती हैं।

जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई।
जो तिसु भावै नानका साई वडिआई।।

यह संसार मौत और पैदाईश का देश है। जो पैदा हुआ है उसने एक दिन संसार से जाना भी है। आज हमें फायदा हुआ है तो खुश होते हैं कल को घाटा भी साथ ही है। जहाँ दिन है वहाँ रात भी है। घाटा होने पर हम रोते है। सन्त कहते हैं कि वही समझदार आदमी है जो आग लगने पर मकान की दीवार तोड़कर भागने की कोशिश करे।

महाराज जी एक बड़ी दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे कि एक आदमी कुएँ में गिर गया। वह कुएँ के अन्दर से आवाज देने लगा। एक राही गुजर रहा था। इंसान की आवाज सुनकर उसने कुएँ में रस्सी लटकाई और उससे कहा, "रस्सी पकड़ और बाहर आ जा।" उसने कुएँ के अन्दर से ही सवाल पूछने शुरू कर दिए, ''यह कुआँ किसने बनवाया? इस कुएँ में और कितने आदमी गिर सकते हैं?'' राही ने कहा कि तू जल्दी से रस्सी पकड़कर बाहर आ जा मुझे और भी काम है। उसने फिर पूछा, ''मैं इस कुएँ में क्यों गिरा, क्या मैं इस कुएँ में फिर तो नहीं गिर जाऊंगा?'' राही ने गुस्से में रस्सी छोड़कर कहा तेरे जैसे अनेकों ही इस कुएँ में गिर सकते हैं।

अगर वह समझदार होता तो रस्सी पकड़कर बाहर आ जाता बाहर आकर जो मर्जी सवाल करता। इसी तरह महात्मा हमें 'नाम' की डोरी के साथ जोड़ देते हैं। वही समझदार है जो उस डोरी को मजबूती से पकड़ लेते हैं; रोज़-रोज़ ऊपर चढ़ने की कोशिश करते हैं; **परमात्मा की आवाज** को सुनते हैं। बाकी हम सवाल जवाब में ही अपना समय खराब कर देते हैं।

महाराज जी कहा करते थे कि अधिकारी के लिए एक ही लफ्ज़ बहुत होता है। गुरु नानक देव जी ने हमें जो समझाया है हम उस पर अमल करें, भजन-अभ्यास करें और अपने जीवन को सफल बनाए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

लहर

77 आर.बी. आश्रम राजस्थान

प्रश्न : *मैं कई बार अपने आपको पाखंडी महसूस करता हूँ कि मैं जो करता हूँ वह डर से करता हूँ भक्ति भावना से नहीं करता?*

उत्तर : हमारे अंदर दो लहरें उठती हैं, एक **लहर** को मन और दूसरी लहर को सतगुरु की ताकत उठाती है। जब हमारे अंदर मन की **लहर** उठती है तो मन हम पर हावी हो जाता है, तब हमारे अंदर ऐसे विचार आते हैं कि मैं बहुत अच्छा भक्त हूँ! गुरु का सेवक हूँ! मेरा भजन-सिमरन बहुत अच्छा बनता है।

हमें लगता है कि हम भजन-सिमरन करते हैं दूसरे लोग कुछ नहीं करते। जब हमारे अंदर आत्मा की **लहर** उठती है तब हमारे विचार शुद्ध हो जाते हैं, सच बाहर आ जाता है। हम अपनी कमियों को महसूस करते हैं कि हम वह नहीं कर रहे जो हमें करना चाहिए। जब आप अपने आपको पाखंडी महसूस करें तो आपको समझ जाना चाहिए कि यह आपकी आत्मा की आवाज है जो आपको बता रही है कि आपको क्या करना चाहिए?

हमारे अंदर सदा ही चार ताकतें- *मन, बुद्धि, विवेक और अहंकार* काम करते हैं। *मन* हमें अच्छा या बुरा काम करने के लिए मजबूर करता है। *बुद्धि* हमें अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करती है। *विवेक* से हमें पता लगता है कि हमारे आस-पास क्या हो रहा है? *अहंकार* हमें यह महसूस करवाता है कि हम ही सब कुछ करने वाले हैं। ये चारों ताकतें हमें गुमराह करती हैं।

जब आपके अंदर बुरे विचार उठते हैं तो आपको समझ लेना चाहिए कि आपका मन आपके ऊपर हमला कर रहा है और आपको

उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। जब आपके मन में परमात्मा और भजन-सिमरन के लिए विचार उठें तो आपको समझ लेना चाहिए कि ये विचार आपके गुरु की तरफ से आ रहे हैं।

प्रश्न : *क्या ज्यादा खाना खाने से हमें भजन-सिमरन पर बैठने में मदद मिलती है और हम गहरी साँस ले सकते हैं?*

उत्तर : प्यारेयो! आपको उतना ही खाना, खाना चाहिए जितना आप हजम कर सकें। खाना खाने के बाद यह महसूस नहीं होना चाहिए कि आपने ज्यादा खा लिया है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''इसमें कोई समझदारी नहीं कि ज्यादा खाना खाने के बाद आप हाजमें के लिए कोई चूर्ण खाएं।''

प्रश्न : *भजन-सिमरन करते हुए हमारे शरीर में दर्द होता है। जब हम भजन-सिमरन के लिए आपके साथ कमरे में बैठते हैं तो क्या आप भी हमारे साथ उस दर्द को महसूस करते हैं? क्या आप उस दर्द से मुक्त करवाने में हमारी मदद करते हैं?*

उत्तर : आपको ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु आपके दर्द को नहीं जानता। एक पल भी ऐसा नहीं होता जब गुरु शिष्य के दर्द को महसूस न करे। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप यहाँ बैठकर सिमरन करें या अपने घर में बैठकर सिमरन करें। गुरु सदा ही आपकी मदद करता है और वह हमेशा ही आपके दर्द को महसूस करता है। गुरु हमेशा ही अपने शिष्य की भलाई के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

सुखी बसे मेरो परिवारा, सेवक सिख सभे करतारा।

संगत ही गुरु का परिवार होती है। गुरु परमात्मा से संगत की भलाई के लिए प्रार्थना करते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''वही गुरु कहलवाने का हकदार है जो दूसरों का दर्द जान सके, उस दर्द को उठा सके। जो दूसरों के दर्द को नहीं जानता उसे गुरु नहीं कहलवाना चाहिए।''

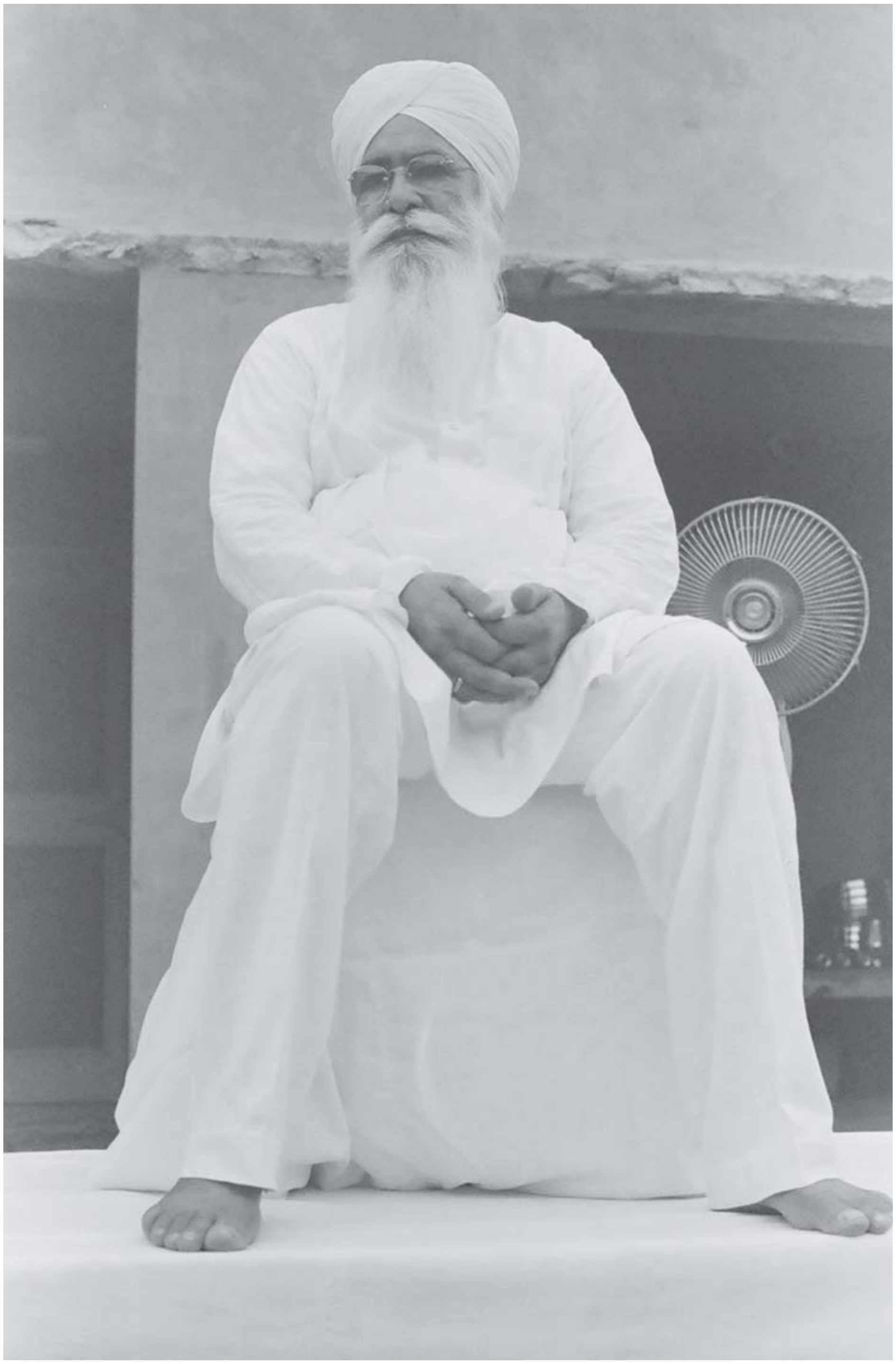

कई सतसंगियों ने अपने जीवन में अनुभव भी किया होता है कि किस तरह गुरु दुनियावी कामों में भी अपने शिष्यों की मदद करता है। सतसंगी कई बार देखता है कि किस तरह गुरु सामने आकर उसकी मदद करता है और कभी पर्दे के पीछे भी उसकी मदद करता है।

सतसंगी को अपने किए हुए हर कर्म की सजा नहीं भुगतनी पड़ती। गुरु खुशी और प्यार से अपने शिष्य के कर्मों का बोझ अपने ऊपर लेता है जिसका शिष्य को पता भी नहीं चलता।

एक बार महाराज कृपाल ने सतसंग देने के लिए श्री गंगानगर आना था। आपके आने से पहले प्रेमी लोग सतसंग का इंतजाम देखने के लिए आए हुए थे। जब वे मेरे पास आए उस समय मुझे बहुत तेज बुखार था। उन प्रेमियों ने मुझसे पूछे बिना महाराज जी को दिल्ली तार दे दिया कि मुझे बहुत तेज बुखार है। जब मुझे इस बात का पता लगा तो मैं उन प्रेमियों से बहुत नाराज हुआ कि आप लोगों ने ऐसा क्यों किया? मैं जानता था कि जब मेरे गुरु को मेरी बीमारी का पता चलेगा तो वह मेरे कर्म अपने ऊपर ले लेंगे। मेरा बुखार उतर गया। मैं समझ गया कि महाराज जी ने मेरे कर्म अपने ऊपर ले लिए हैं।

बहुत से प्रेमी महाराज जी के आने का इंतजार कर रहे थे। मैंने उन प्रेमियों से कहा , ''महाराज जी आज नहीं कल आएंगे।'' महाराज जी को तेज बुखार हो गया इसलिए उन्हें गंगानगर आने का प्रोग्राम टालना पड़ा। जब महाराज जी तीसरे दिन गंगानगर आए तब आपका चेहरा पीला पड़ा हुआ था, आप बहुत कमजोर लग रहे थे। मैं जब महाराज जी से अकेले में मिला तो रो पड़ा, मैंने आपसे माफी माँगी। मैंने आपसे कहा, ''हे सतगुरु! आप मुझे माफ कर दें। मैंने आपको तार नहीं भेजा था। मैं जानता था कि आप मेरे कर्म अपने ऊपर ले लेंगे। मैं तो ठीक हूँ लेकिन मैं आपको बीमार देख रहा हूँ।''

शिष्य कभी ऐसा नहीं चाहता कि उसका गुरु उसके कर्मों का बोझ उठाए। शिष्य सदा ही सतगुरु का बोझ कम करने में खुश होता है।

जब आत्मा को पूर्ण सतगुरु के दर्शन होते हैं तो यह आत्मा कई जन्मों के कर्मों से मुक्त हो जाती है। जब इसे पूर्ण गुरु से 'नामदान' मिलता है, सतगुरु इस पर दया करता है तब इसके पिछले जन्मों के कई कर्म खत्म हो जाते हैं। आत्मा को गुरु पर पूरा विश्वास हो जाता है कि इसका गुरु इंसान नहीं सृष्टि का रचयिता है और इस आत्मा को सच्चखंड पहुँचाएगा। कुछ ही भाग्यशाली आत्माएं गुरु की महिमा को समझ सकती हैं। बुल्लेशाह कहते हैः

बुल्लया साड़ा ओथे वासा, जित्थे बहुते अन्ने।
ना साड़ी कोई कद्र पछाणे, ना सानू कोई मन्ने।।

यह दुनिया अंधे लोगों से भरी पड़ी है। बहुत कम लोग ही सतगुरु को पहचानते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मैं उन्हें अंधा कहता हूँ जो परमात्मा की रोशनी को नहीं देख पाते जबकि उनके पास परमात्मा की दी हुई आँखें हैं।'' इतिहास इस बात का गवाह है कि दुनिया ने किस तरह कबीर साहब, गुरु नानक देव जी, गुरु अर्जुन देव जी और गुरु गोविंद सिंह जी को कष्ट दिए। उन लोगों के पास महात्माओं को पहचानने वाली आँखें नहीं थी कि इन महात्माओं के अंदर परमात्मा काम कर रहा है। इसलिए उन्होंने किसी महात्मा को सूली पर चढ़ाया और किसी महात्मा को गर्म तवे पर बिठाया।

प्रश्न : *हम जिंदगी में कितनी चीजें खुद चुन सकते हैं? क्या सब कुछ पहले से ही तय है? नामलेवा और बिना नामलेवा में क्या फर्क है?*

उत्तर : सब कुछ पहले से ही तय होता है। सतसंगी पर जब कोई दुःख आता है तो उसे सारा दुःख नहीं भोगना पड़ता। उसके ऊपर सतगुरु का हाथ होता है, सतगुरु सदा ही उसकी रक्षा करता है। हम हमेशा ही अपने मन की बात सुनते हैं। जब कुछ अच्छा होता है तो हम कहते हैं, ''यह सब हमने किया है।'' जब कुछ अच्छा नहीं होता तो हम उसके लिए परमात्मा को जिम्मेवार ठहराते हैं और सब गुरु पर छोड़ देते हैं।

हम मन के कहे अनुसार चलते हैं। जब हम अपनी आत्मा को मन के पिंजरे से आजाद कर लेते हैं तो हमें मन और आत्मा का फर्क समझ आ जाता है।

प्रश्न : *जब मैं दोपहर के बाद सिमरन के लिए बैठता हूँ तो मुझे बहुत मुश्किल होती है?*

उत्तर : दुनिया के बारे में ना सोचें, अपना ध्यान सिमरन की तरफ रखें; आपको कोई मुश्किल नहीं आएगी।

प्रश्न : *मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि मैं बहुत स्वार्थी हूँ। मैं जब आगे बढ़ना चाहता हूँ तो दूसरे नामलेवा लोगों से अपनी तुलना करता हूँ। मैं सिर्फ अपनी चढ़ाई की तरफ ध्यान देना चाहता हूँ?*

उत्तर : यह वैसा ही प्रश्न है जैसा आपने पहले पूछा था इसलिए उत्तर भी वैसा ही है। जब हमारे अंदर मन की **लहर** पूरी शक्ति से उठती है तब हमें लगता है कि हम स्वार्थी हैं। सन्तमत में ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए, अपनी तुलना दूसरों से नहीं करनी चाहिए। आप महान नहीं हैं महान तो सिर्फ सतगुरु ही है।

प्रश्न : *गुरु की पहली जिंदगी में जब वह सतगुरु नहीं बना था तो उसने अपनी जिंदगी में बहुत से कष्ट और कर्म क्यों सहे होते हैं?*

उत्तर : आप नहीं जानते कि गुरु ने सतगुरु बनने से पहले दुःख क्यों सहे होते हैं? आज आप उसका जो रूप देख रहे हैं उसमें जो शक्ति काम कर रही है उसके बारे में आपको कुछ पता नहीं होता। आप उसके पिछले जन्मों के बारे में भी कुछ नहीं जानते।

महाराज सावन सिंह और महाराज कृपाल भी यही कहा करते थे, ''सभी गुरुओं की आत्माएं इस संसार में आने से पहले धुरधाम से ही तैयार होकर आती हैं। उन्होंने हमें दिखाना होता है कि भजन-सिमरन के बिना और दुःख सहे बिना हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए हम उन्हें दुःख सहते हुए और मेहनत करते हुए देखते हैं।''

प्रश्न : *अमेरिका में ज्यादा लोग इसाई हैं। वे लोग प्रार्थना सभा में जाकर जीसस के सामने प्रार्थना करते हैं और उन्हें कई बार किसी पवित्र आत्मा का प्रभाव भी महसूस होता है। मुझे हैरानी है अगर ऐसी भावनाएं जीसस से नहीं आती तो कहाँ से आती हैं?*

उत्तर : ऐसी धारणा हर धर्म में होती है। भारत में भी बहुत से लोग गुरुद्वारों में जाकर अपने पिछले गुरुओं के आगे अरदास करते हैं वे यह भी दावा करते हैं कि उन्होंने अपने अंदर गुरु की उपस्थिति महसूस की है। मेरा अनुभव यह है कि जब हम पिछले गुरुओं को याद करते हैं तो मन को कुछ शान्ति जरूर मिलती है लेकिन हमें कोई गुरु नहीं मिलता जो हमारी आत्मा की जिम्मेवारी ले। किसी भी धार्मिक स्थान पर जाने से हमारी आत्मा चढ़ाई नहीं करती इसलिए बहुत कम समय में ही हमारा विश्वास उस धर्म से डगमगा जाता है।

जब लोग चर्च में जाकर प्रार्थना करते हैं तो वे अच्छा काम कर रहे होते हैं। उनकी प्रार्थना भक्ति में गिनी जाएगी लेकिन ऐसी जगह जाने से ऐसा कुछ नहीं होता जो मौत के समय हमारी मदद कर सके।

मेरा जन्म सिख धर्म में हुआ। मेरे माता-पिता बहुत श्रद्धालु थे। वे बहुत लगन से गुरु ग्रन्थ साहब पढ़ते और गुरुद्वारे में जाकर अरदास भी करते। वे सिख धर्म के अनुसार सभी काम विधि-विधान से करते और चाहते थे कि मैं भी उसमें विश्वास करूं। मैं गुरु ग्रन्थ साहब में विश्वास करता था; मुझे गुरु ग्रन्थ साहब में से इशारा मिला कि एक जीवित पूर्ण गुरु की जरूरत है। मैं गुरु की खोज में लग गया।

मेरे पिता मुझसे कहते, ''गुरु नानकदेव जी एक पवित्र आत्मा थे, वही सब कुछ करेंगे।'' मैं अपने पिता से पूछता कि क्या आपने कभी गुरु नानकदेव जी को देखा है? जब आपने उन्हें देखा ही नहीं तो आप उनके बारे में क्या कह सकते हैं फिर उनके पास कोई जवाब नहीं था।

मैं भक्ति करने लगा, पूर्ण गुरु को ढूंढ रहा था और मुझे मेरा पूर्ण गुरु मिल गया। मेरे पिता जी को यकीन नहीं आया। वह कहते,

''मैं समय आने पर तुम्हारी भक्ति देखूंगा।'' जब उनका आखिरी समय आया तो उनके धार्मिक विश्वास से उन्हें कोई मदद नहीं मिली। उस समय उन्होंने महाराज सावन सिंह और महाराज कृपाल की उपस्थिति महसूस की। दोनों महान गुरु उनकी आत्मा की संभाल करने के लिए आए। उस समय मेरे पिता जी ने मुझसे बहुत प्यार किया और कहा, ''अब मुझे अहसास हो गया है कि तुम्हारी भक्ति ही सच्ची भक्ति है।''

गुरु नानक देव जी ने इस तरह की अरदास और रीति-रिवाज के बारे में लिखा है कि जो लोग बिना देखे ही बीते हुए गुरुओं की भक्ति कर रहे हैं उनकी हालत उस औरत जैसी है जिसका पति उसे छोड़कर दूर देश चला गया हो और वह औरत हार-श्रंगार करके दुल्हन की तरह सजती हो तो लोग उस पर शक करते हैं कि यह औरत पतिव्रता नहीं है।

इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे लोग अच्छा काम कर रहे हैं लेकिन ऐसी भक्ति से कोई फायदा नहीं। जब आपने गुरु को देखा ही नहीं। गुरु ने आपकी आत्मा को संभालने का कोई वायदा नहीं किया तो उसकी भक्ति करने से आपको क्या फायदा होगा?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आप किसी दुकान पर जाएं और वहाँ दुकानदार ही न हो! चाहे आपके पास दुकानदार की तस्वीर हो और आप उस तस्वीर से प्रार्थना करें कि मुझे यह चीज़ चाहिए तो वह तस्वीर आपको सामान नहीं देगी। आप ऐसी दुकान पर जाएं जहाँ जीता-जागता दुकानदार बैठा है तो उससे आपको आपकी जरूरत का सब सामान मिल जाएगा।''

★★★

बाबा जी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

पवित्र

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया। हमें अपनी भक्ति करने का मौका दिया।

महाराज सावन कहा करते थे, ''शिष्य की भी कुछ जिम्मेंवारियां होती हैं जो उसे निभानी बहुत जरूरी हैं।'' हम सतसंगियों को तन, मन और धन को **पवित्र** रखने की कोशिश करनी चाहिए। मन को **पवित्र** रखने का साधन सिमरन है। गुरु द्वारा बताए हुए पाँच **पवित्र** शब्दों का सिमरन करने से हमारा मन पवित्र होता है।

मन **पवित्र** न होने पर ही हमारे मन में बुरे ख्याल उठते हैं। जब हमारा मन पवित्र हो जाता है तब मन से उठने वाले ख्याल अपने आप ही पवित्र हो जाते हैं। **पवित्र** होने पर ही यह भूला-भटका मन परमार्थ की तरफ आता है तो स्वभाविक ही तन को पवित्र रखने की आदत बन जाती है।

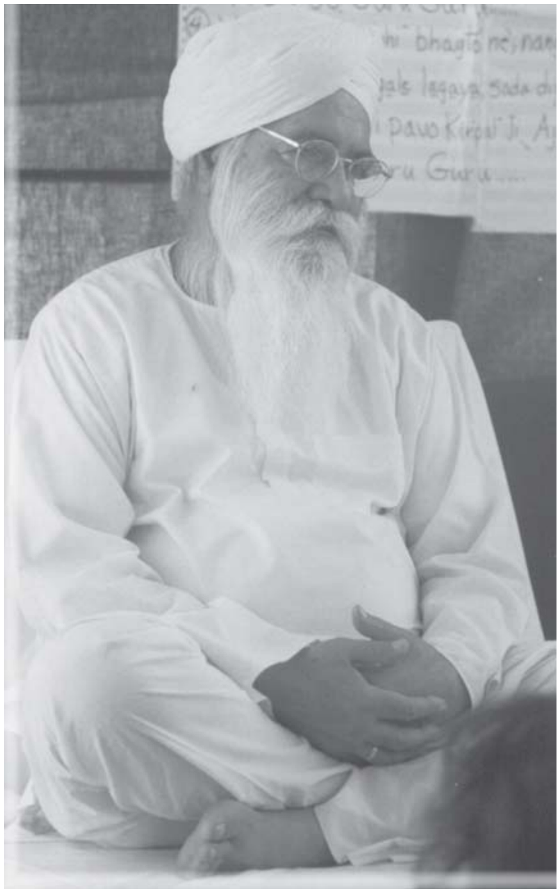

अब मौका है कि हम मन को जवाब देकर प्यार से सिमरन में बैठें। मैं हर रोज ही बताया करता हूँ कि आप अभ्यास में यहाँ बैठें, घर में बैठें, चाहे कहीं भी बैठें; अभ्यास को बोझ न समझें प्यार से करें। बैठने से पहले पाँच **पवित्र** नाम अच्छी तरह याद कर लें।

महाराज जी कहा करते थे कि अभ्यास में बैठने से पहले गुरु प्यार का विरह भरा शब्द पढ़ा जाए, जिससे मन में तड़प पैदा होती है। मन की आदत है कि जब हम भजन पर बैठते हैं तो यह अपना दफ्तर खोलकर बैठ जाता है। हमारी भूली हुई बातों को मन भजन-अभ्यास में याद करवा देता है। अंदर बैठकर कभी भी मन की बात न सुनें।

महाराज सावन सिंह जी एक बहुत ही हँसी वाली बात सुनाया करते थे कि एक जाट ने आकर मुझे बताया, ''बहुत समय से मेरी कुल्हाड़ी गुम हो गई थी। मैं जब भजन में बैठा तो मेरे मन ने मुझे याद दिलवाया कि वह कुल्हाड़ी अमुक जमींदार के घर में है।'' मन का मकसद तो यही था कि यह भजन से उठ जाए! आप गुरु की बात सुनने के लिए भजन में बैठते हैं, गुरु की बात ही सुनें।

आप आँखें बंद करके, प्रेम-प्यार से अपना सिमरन शुरू करें।